शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भीली-भीलाली जनजाति : उद्भव और विकास

बिरज मुवेल (शोधार्थी)
डा.परमेश्वर दत्त शर्मा शोध केंद्र
श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आदिवासी जिन्हें हम आदिम जाति जनजाति या भूमिजन के नाम से जानते हैं। भारत के अन्य प्रदेशों के समान मध्यप्रदेश में भी सुदूर वन प्रांतों के बीच कुदरती जिन्दगी बसर करते हैं। धरती की खुशबू और कुदरती वातावरण में उनकी तहजीब ढलकर निकली है। आदिम युग से ही आदिवासी प्रकृति प्रिय एवं प्रकृति के निकट रहे हैं , जिससे उनका संपूर्ण जीवन प्राकृतिक साधनों पर ही निर्भर रहा है। वैज्ञानिक युग में भी वे ही प्राकृतिक जिंदगी जीना और पसंद करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भीली-भीलाली जनजाति के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है

जनजाति का सामान्य परिचय

"सूर्य-पूजा, चन्द्र-पूजा, वृक्ष-पूजन, पशु-पक्षी-वंदना, पर्वत-आराधना, धरती-स्तुति, नक्षत्रों का दर्शन, जलाशयों के प्रति श्रद्धा आदि प्रायः समस्त आदिवासी समाज में प्रचलित हैं। सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों में प्रकृति देवी की अर्चना अनिवार्य मानी गई है। "पुराने वृक्षों में देवी-देवताओं का निवास मानकर इन विटपों को पूजा जाता है। पुरातन तालाबों में , गहरे जल-प्रवाहों में तथा सन-सन करती हुई आंधी में भूत-प्रेतादि का विश्राम-स्थल माना गया है।"

जनजाति अथवा आदिवासी ऐसे मानव समूह हैं जिन्होंने बाह्य सभ्यता के कुछ तथ्वों को ग्रहण करने के बाद भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नहीं होने दिया है। सामान्यतया हम 'जनजाति' शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए करते हैं जो आधुनिक सभ्यता से दूर, गहन जंगलों के अंधेरे कोने में , पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियों पर एवं पठारी क्षेत्रों में निवास करते हैं। सामान्यतया लोग जनजाति या आदिवासी शब्द का अर्थ पिछड़े हुए और असभ्य मानव समूह से मानते हैं। "प्रारंभिक दशा में धर्म सामुदायिक तथा स्थानीय था। एक समुदाय अपने निवास-स्थान में भिन्न-भिन्न प्राकृतिक तत्व तथा भद्दी मूर्तियों को पूजने के अतिरिक्त पेड़-पौधे, नदी-पर्वत, ताल-तलैये इत्यादि की अर्चना करता था। कुछ जनजातियां जंतुओं को पूजती थीं तो कुछ भूत-प्रेत , पिशाच प्रभृति अपदेवताओं का पूजन करती थी। उनका ऐसा विश्वास था कि पेड़-पौधे, नदी-पर्वत प्रभूति प्राकृतिक चमत्कारों का एक-एक अधिष्ठाता देवता होता है। उसी को प्रसन्न करने के लिए वे मद्य-मांस का भोग चढ़ाते तथा उसको व श में करने के लिए जादू-टोना भी करते थे। इसके बहुत से साहित्यिक प्रमाण उत्तर काल में रचित भिन्न-भिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं।"

प्रारंभिक अवस्था में मानव जंगलों और पहाड़ों में अकेला निवास करता था , पर एक सामाजिक प्राणी होने के नाते वह अन्य मनुष्यों के संपर्क में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आया और उनके साथ रहने लगा। धीरे-धीरे मनुष्यों का समुदाय या जत्था बन गया व इनकी सदस्य संख्या में वृद्धि होने लगी और अधिक संख्या होने के कारण भोजन प्राप्त करने में कठिनाईयां होने लगीं। अतः यह समुदाय या जत्था छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हो गया और इन छोटे छोटे टुकड़ों को अनुसूचित जनजाति , आदिवासी वन्य जाति के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। डॉ.ललित प्रसाद विद्यार्थी का कथन कहा है कि "प्रकृति की पूजा एक दूसरे प्रकार के विश्वास से भी संबद्ध है जो जनजातियों में पाई जाती है। सूर्य , चंद्रमा एवं पृथ्वी या तो रचियता या सर्व शक्तिमान समझे जाते हैं। " "लोगों का विश्वास है कि धरती माता के वक्ष पर बहे हुए खून से फसल अच्छी होती है। कुटिया कोंड धरती देवी के लिए भैंस की बलि तीक्ष्ण कुल्हाड़ी से सिर काटकर देते हैं।"

साधारणतः हमारी आदिम जातियां आधुनिक सभ्यता से हटकर प्रकृति की एकांत गोद में निवास करती है। वस्तुतः प्रकृति और उनके बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया है। वे अपनी जीविका के लिए भी प्रधानतः प्रकृति पर आश्रित हैं। इसीलिए एक ओर उनमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा है तो दूसरी ओर उससे भय भी। इसी श्रद्धा तथा भय के बीच उनके सामाजिक रीति-रिवाज , धार्मिक विश्वास और जादू-मंत्र पल्लवित एवं पुष्पित होते रहे हैं। वस्तुतः उनकी जीवन- शैली एवं संस्कृति एक ओर प्रकृति से तो दूसरी ओर भूत-प्रेतों की दुनिया से संबद्धता एवं संघर्ष की कहानी है। जनजाति सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को प्रकृति-मनुष्य आधिभौतिक सत्ता-ग्रंथि के पारस्परिक आदान-प्रदान के संदर्भ में समझा जा सकता है।"

डब्ल्यू.एच.आर.रिवर्स ने कहा है "आदिम जाति एक अत्यंत साधारण कोटि का सामाजिक समूह होता है जिसके सदस्य एक साधारण भाषा बोलते हैं, उसकी एक शासन प्रणाली होती है तथा सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तथा युद्ध इत्यादि की स्थिति में एकता का प्रदर्शन करते हैं।"

डी.एन. मजूमदार ने कहा है कि "जनजाति परिवारों का एक समूह होती है जिसके सदस्य एक ही भाषा का प्रयोग करते हैं , एक ही क्षेत्र में निवास करते हैं , विवाह तथा पेशे से संबंधित समान निषेधों का पालन करते हैं तथा उनके बीच सुविकसित पारम्परिक-विनिमय की व्यवस्था पाई जाती है।"

आर.एन. मुखर्जी ने कहा है, "उस मानव समूह को जनजाति कहा जाता है जिसके सदस्य आम अभिरूचि, प्रदेश, भाषा, सामाजिक नियम तथा आर्थिक पेशों से बंधे होते हैं।" जनजाति का अर्थ उस जाति से है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णों में नहीं आते हैं , इन्हें आदिवासी, वनवासी, मामा, अनपढ़ आदि कई नामों से सम्बोधन करते हैं। भारतीय संविधान में इन्हें जनजाति कहा है।

भीली जनजाति

"भील शब्द संस्कृत भाषा के भिल्ल शब्द का तद्भव रूप है जो स्वयं संस्कृत की भिल्-बिल भेदने धातु से मूलबुद्ध है। संस्कृत में भिल्ल शब्द मलेच्छ देश और जाति दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। भील शब्द द्रविड़ भाषा के 'बील' से निकला है जिसका अर्थ 'कमान', तीर-कमान के व्यवहार ने निपुण होने के फलस्वरूप सम्भवतःयह जनजाति भील कहलाई। भीली भिलाली को सर जा न मालकम ने राजपूतों की श्रेणी में रखा है तथापि दोनों में 'वंशानुगत सूक्ष्म

भेद भी सामने आते हैं। जिस तरह भील निषाद , मूल के माने जाते हैं ठीक उसी तरह भिलाला राजपूत मूल के माने जाते हैं। वे राजपूत पिता भील माता से उत्पन्न माने जाते हैं।

भील दे श की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। मध्यप्रदेश में भील जनजाति का दूसरा स्थान है। गोंड प्रदे श की प्रथम जनजाति है। भीलों का मुख्य निवास प्रदे श के पश्चिमी हिस्से धार , झाबुआ, आलीराजपुर, बड़वानी, सेंधवा, रतलाम, नीमच, बड़वानी और पश्चिम निमाड जिले में है। मध्यप्रदेश का पश्चिमाञ्चल भीलों के कारण पहचाना जाता है। मध्यप्रदे श के अलावा भीलजन राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में भी निवास करते हैं। धार , आलीराजपुर, झाबुआ में भीलों का 85 प्रति शत है। "भील-मोतबिरों और उनके समुदायों से बातचीत करने पर यह तथ्य हाथ लगा कि शिवजी ने अपने हाथ से जो प्रथम बीला (वृक्ष) पैदा किया उसके पत्ते , उनके भक्त एक पुजारी उन्हें फल चढ़ाने लग गया। जब उस देवता की धाम चलने लगी तो वहां मेला जातरा आने लगे और यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई तब पुजारा भी बीला नाम से जाना जाने लगा। यही बीला होते-होते भीला नाम से पुकारा जाने लगा। कालांतर में उसकी संतति भी इसी नाम से जानी गई। यही संतति भील नाम से आज भी सब जगह फैली हुई है।"

"भील सांस्कृतिक रूप से अत्यन्त समृद्ध जनजाति है। भील भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक है। एक पौराणिक आख्यानों में भीलों का वर्णन मिलता है। रामायण, स्कन्ध पुराण, षिव पुराण, विष्णु पुराण आदि में भील या निषाद का उल्लेख आया है। "

भीलों का पौराणिक नाम निषाद रहा है। वैदिक साहित्य में निषाद शब्द का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। राजा वेन की जंघाओं को रगड़ने से जो पुरूष पैदा हुआ उसे निषाद नाम दिया गया। इसी निषाद को भील अपना पूर्वज मानते हैं। भील निषाद का ही पर्याय है।

"भील धनुर्विद्या में पारम्परिक रूप से निपुण रहे हैं। धनुषबाण रखना और चलाना भीलों की नैसर्गिक विशेषता है। द्रविड़ भाषा में धनुष बाण के लिए 'बील' शब्द रखने का प्रयोग होता है। इसी 'बील' से भील शब्द स्वीकृत हुआ है। तीर धनुष चलाने में भील लोग पारम्परिक रूप से दक्ष होते हैं। तीर धनुष भीलों के जीवन का अभिन्न अंग है। आज भी भील युवक तीर-धनुष साथ रखने में गौरव का अनुभव करते हैं।"

पुराण प्रसिद्ध धार के राजा भोज के शासन काल में भीलों ने समय समय पर सामाजिक सहायता प्रदान की है। सोलहवीं शताब्दी में भल्लू नायक के शासन काल में इस क्षेत्र का नाम झाबुआ पड़ा।

"भीलों का निवास धार , झाबुआ, आलीराजपुर, बड़वानी, सेंधवा, खरगोन की वृक्ष विहिन पहाड़ियों पर होता है। भील लोग अलग दूरियों पर अपना घर बनाना पसंद करते हैं। एक से दूसरे घर की दूरी एक दो किलोमीटर भी हो सक ती है। इसके कारण भील लोग जंगलों , पेड़ों का समाप्त (काटकर) मकान बनाते हैं। झाबुआ का धरातल काफी ऊबड़-खाबड़ और बेतरतीब है। भीलों के घर लकड़ी, बांस, मिट्टी और खपरल के होते हैं। भीलों के घर आकार में बड़े खुले-खुले और हवादार होते हैं। बांस का प्रयोग बाड़ों के निर्माण में अधिक दिखाई देता हैं। सम्पन्न भीलों के मकानों के दरवाजे लकड़ी के बने होते है। जो बहुत कलात्मक और काफी बड़े होते है। भील जहाँ रहते है, उस जगह को 'फाल्या' कहते हैं।

भिलाला जनजाति

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भिलाला मध्यप्रदेश के पश्चिमी अंचलों में बसे वे आदिवासी हैं, जिन्होंने पिछली दो शताब्दियों में अपनी अलग पहचान बनाई है। भिलाला मूलतः भीलों की ही एक शाखा है तथा इनका निवास स्थान भी भीलो कें समान राजस्थान ही रहा है। वस्तुतः अपने भौतिक बनावट रूप-रंग में ये बहुत कुछ भीलों के समान राजस्थान ही रहा है। वस्तुतः अपने भौतिक बनावट रूप-रंग में ये बहुत कुछ भीलों के समान ही है किन्तु कद और डील-डौल में वे भीलो से कहीं ऊँचे और बलिष्ठ होते है। उनकी उत्पत्ति और वर्तमान स्थिति तक पहुँचने के बारे में अनेक दंत कथाएँ प्रचलित है। भील अपने इतिहास में राजपूतों के वफादार सिपाही थे और उन की सेवा ईमानदारी से करते हैं।

"भिलाला शब्द की व्युत्पत्ति (भील +आला) दो शब्दों से हुई है। ये सुसंस्कृत भील-भिलाले है। ये अपने आपको ठाकुर , भूमियां, रावत,पटेल,मुखिया आदि कह कर साधारण भीलों से पृथक मानते हैं। प्राचीन मध्यप्रदे श तथा मध्य भारत मे इनकी संख्या अधिक है। भिलाला वर्ण संकर जाति मानी जाती है।"

वास्तव में यह कहने में कोई अति शयोक्ति नही है कि भिलाला जाति की उत्पत्ति भील से हुई है। यह माना जाता है कि भारत पर जब मुस्लिम आक्रमण हुआ तब राजपूत भागकर जंगलों में चले गये थे तथा जिन राजपूतों के भीलों की कन्याओं से विवाह किया उन्हीं की संताने 'भिलाला' कही जाने लगीं।

सी.एस. वैंकटाचार्य के अनुसार , "भिलाले लोग विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों में फैले हुए भील व पटेलिये, बारेले, तथा राजपूतों के खून का मिलाप है। ये अपने आपको राजपूतों की संतानें मानते हैं तथा उन्हें अपना निकट संबंधी भी मानते है जो भिलाला अपने नाम के पीछे ठाकुर, रावत, पटेल, बघेल इत्यादि लगाते हैं।" कुछ भिलाले अपने आपको पृथ्वीराज चौहान के घराने से संबंधित बतलाते हैं। जब मोहम्मद गौरी ने चौहानों को मार भगाया तो दो लाख लोग मेवाड़ और उदयपुर के राज्यों में आकर बस गये। सन् 1903 में जब अलाउद्दीन ने चितौड़गड़ पर अधिकार किया तो ये विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियों में आकर बस गये। यद्यपि इन्होंने भील स्त्रियों से विवाह किये किन्तु अपने को उनसे ऊँचा ही रखा है। इसी कारण भील मैले जबकि भिलाला उजले-उजले कहलाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्रीचंद्र जैन वही आदिवासियों के बीच पृ. 12, 14, 15, 17, प्रकाशक, शिवानी बुक्स, 4855/24 हरबस स्ट्रीट दरियागंज नयी दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2007

2. प्रो. विजय शंकर उपाध्याय , डा.गया पाण्डेय- जनजातीय विकास , पृ.1-2, प्रथम संस्करण 2002 प्रकाशक मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग बाणगंगा भोपाल

3.डॉ.महेन्द्र भानावत, उदयपुर के आदिवासी , उदयपुर के भीली क्षेत्र का शोद्य एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण पृ. 5 प्रथम संस्करण मार्च 1993, प्रकाशक भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर 313001

4.प्रो हीरालाल शुक्ल, आदिवासी अस्मिता और विकास म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल , प्रथम संस्करण 1997

5. डॉ.शिवकुमार तिवारी, म.प्र. के आदिवासी , प्रथम संस्करण 1984

6. डॉ.हरिशचन्द्र उप्रेती, भारतीय जनजातियाँ पृ. 30 , प्रथम संस्करण 1970, सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र राज. वि.वि. जयपुर